Q:- कृषि वित्त क्या है? इसके कितने प्रकार हैं? कृषि वित्त में नाबार्ड की भूमिका का वर्णन करें। भारत में कृषि वित्त के क्षेत्र में मुख्य कमियाँ क्या है?

उत्तर भारत में किसानों को कृषि करने हेतु वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति कृषि वित्त द्वारा की जाती है। सीधे शब्दों में - कृषि हेतु उत्पन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दी जाने वाली सहायता राशि कृषि वित्त कहलाती है।

कृषि वित्त के प्रकार

कृषि वित्त दो प्रकार के होते हैं -

① उद्देश्य के अनुसार
② समयावधि के अनुसार

① उद्देश्य के अनुसार कृषि वित्त के प्रकार -

a) उत्पादकता :- कृषि कार्य में उत्पादन बढ़ाने के लिए ली जाने वाली ऋण "

b) गैर कृषि कार्य :- कृषि कार्य के अलावा जैसे शादी-ब्याह हेतु ली जाने वाली ऋण

② समया वधि के अनुसार कृषि वित्त के प्रकार -

a) लघु समयावधि :- 15 से 18 माह के लिए ऋण

b) मध्यम समयावधि :- 18 माह से 60 माह के लिए ऋण

c) दीर्घ समयावधि :- 60 माह से ज्यादा समय के लिए ऋण

कृषि वित्त में नाबार्ड की भूमिका

नाबार्ड कृषि वित्त प्रदान करने वाला शीर्षतम संस्था है। इसका पूरा नाम National Bank for Agriculture and Rural Development है। इसे State Bank of India नियंत्रित करती है।

a) ग्रामीण क्षेत्र, एवं क्षेत्रिय एवं जिला बैंक में धन प्रदान करना।
b) संस्थागत विकास को समर्थ बनाना एवं उसे बढ़ावा देना।
c) ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण प्रदान करने वाली बैंकों का संचालन करना।
d) सहकारी बैंकें एवं क्षेत्रिय ग्रामीण बैंकों में नियामक की भूमिका निभाना।

BHOPAL
Established since: 1990

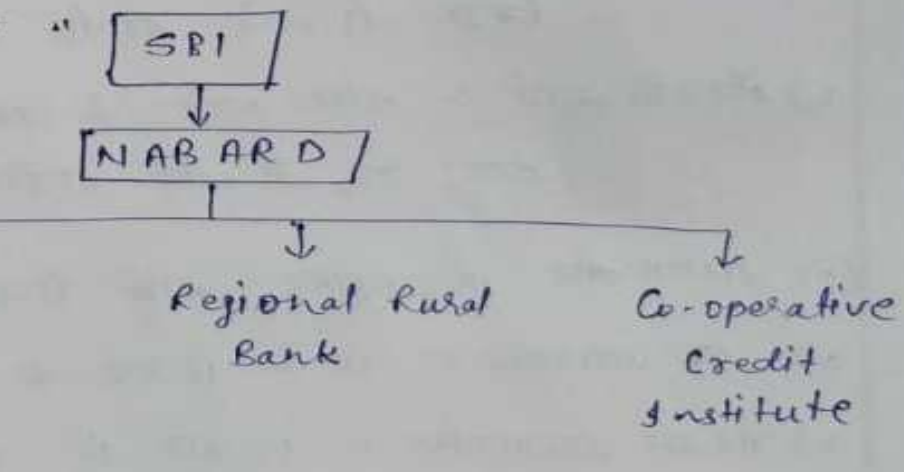

e.) किसानों की सहायता हेतु तरह-2 की योजनाएँ स्थापित करना। जैसे - किसान क्रेडिट स्कीम

f.) किसानों में जागरूकता फैलाना एवं उनको साहूकारों से बचाना आदि।

कृषि वित्त की कमियाँ

यद्यपि सरकार द्वारा कृषि वित्त पर काफी कार्य किया जा रहे हैं तथापि इसकी कुछ कमियाँ हैं -

i.) किसान ऋण लेकर उसे चुकाने से बचते हैं एवं चुनाव आने का इंतजार करते हैं। चुनाव में कई पार्टियाँ कृषि ऋण माफ करने का प्रोजना रखते हैं एवं इससे छोटे किसानों के साथ बड़े किसान भी लाभ कमाते हैं। इससे बैंक का NPA बढ़ता है।

ii.) सरकारी दफ्तरों में बाबूशाही होती है। वहीं बैंक में भी यह काफी चलती है। इससे

इससे बचने के लिए सरकार आजकल डिजिटली पैसे ट्रांसफर की सुविधा लाई है एवं किसान क्रेडिट स्कीम जैसी सुविधा से लालफीता-शाही एवं बाबूशाही पर काफी हद तक लगाम लगा है।